❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

स्मृतिशेष पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी
98वां जन्मोत्सव समारोह
26 मार्च, 2021 सायं 4:30 से 6:30 बजे

आर्यसन्देश टीवी पर अवश्य देखें
www.AryaSandeshTV.com

वर्ष 44, अंक 18 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 22 मार्च, 2021 से रविवार 28 मार्च, 2021
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

शराब खरीदने/पीने की आयु 25 वर्ष से घटाकर 21 वर्ष करना दिल्ली सरकार का एक विनाशकारी कदम

आर्यसमाज ने किया दिल्ली सरकार की नई आबकारी नीति का कड़ा विरोध

युवाओं को नशे के गर्त में धकेलना चाहती है सरकार - युवा पीढ़ी के भविष्य से न करें खिलवाड़

युवा शक्ति के उज्ज्वल भविष्य के लिए फैसला बदले, सरकार
- सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान सार्वदेशिक सभा

शराब का नशा व्यक्ति, परविार और समाज के लिए बड़ा खतरा
- धर्मपाल आर्य, प्रधान दिल्ली सभा

शराब की खरीदारी और प्रयोग न करके विरोध जताएं दिल्ली वासी
- विनय आर्य, महामन्त्री दिल्ली सभा

शराब की बिक्री कम करने के बजाए इसकी बढ़ाने की योजना अपराधों में वृद्धि की जिम्मेदार होगी

आर्य समाज के सिद्धान्त, मान्यता और परम्पराओं के अनुसार नशा एक ऐसा विषैला शैतान है जो व्यक्ति, परिवार, समाज और देश तथा दुनिया को लगातार बर्बाद कर रहा है। इसके लिए समय समय पर आर्य समाज सदैव लोगों को जागरूक भी करता रहता है लेकिन यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि दिल्ली सरकार द्वारा 22 मार्च 2021 को नई आबकारी नीति के तहत शराब पीने वालों की उम्र 25 वर्ष से घटाकर 21 वर्ष करने की घोषणा कर दी है। इस निन्दनीय नीति का आर्य समाज पुरजोर विरोध करता है। इस घृणित कार्य के लिए दिल्ली सरकार को जागृत करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने कहा कि दिल्ली सरकार शायद यह भूल गई है कि दिल्ली भारत की राजधानी है और यहीं से सारे देश और दुनिया में अच्छाई और बुराई का संदेश जाता है। इस कानून को लेकर दिल्ली के उपमुख्यमंत्री श्री मनीष सिसोदिया जी का कहना है कि कम उम्र के बच्चों को आई डी जांच के बाद ही शराब मिलेगी और इसके लिए उन्होंने उत्तर प्रदेश, असम और मध्यप्रदेश जैसे राज्यों का उदाहरण देते हुए कहा कि वहां पर भी 21 वर्ष के युवाओं को शराब पीने की आजादी है। यह कैसा तर्क है कि अगर अन्य राज्यों में कोई गलती हो रही है तो दिल्ली भी उसी गलती को दोहरयेगी। असल में सरकार को देश की युवा पीढ़ी के स्वास्थ्य और उज्जवल भविष्य कोई लेना देना नहीं है, उन्हें तो अपना राजस्व

- शेष पृष्ठ 7 पर

नई शराब नीति को निरस्त कराने हेतु आर्यसमाज का आह्वान : दिल्ली सरकार, क्षेत्रीय विधायकों एवं सांसदों को भेजें विरोध पत्र

दिल्ली सरकार युवाशक्ति को शराब पिलाकर बर्बाद करने और शराब को घर घर तक पहुचाने के लिए नई शराब नीति लेकर आई है, जिसकी 22 मार्च को घोषणा की गई। इस दुर्भाग्यपूर्ण नीति से दिल्ली में -

- ★ **शराब खरीदने और पीने की आयु को घटाकर 25 से 21 वर्ष करने**
- ★ **दिल्ली के सभी वॉर्डों तक शराब की बिक्री को लागू करने और**
- ★ **सरकारी शराब की दुकानों की जगह प्राइवेट दुकानें खोलने के निर्णय लिए गए हैं।**

इसके सन्दर्भ में दिल्ली की जनता को तबाह करने वाले इस कदम को लेकर सरकार का कहना है कि दिल्ली के 272 वार्ड में 79 वार्ड ऐसे हैं जहां 1 भी शराब की दुकान नहीं है। 45 वार्ड ऐसे हैं जहां 1 या 2 शराब की दुकानें हैं। 158 वार्ड ऐसे हैं जहां शराब की दुकानें नहीं हैं या कम हैं। 54 वार्ड ऐसे हैं जहां 6 से लेकर 10 शराब की दुकानें हैं। दिल्ली में 850 शराब की दुकानें 45 वार्डों में हैं।

क्या इन तमाम आंकड़ों को लेकर दिल्ली सरकार वार्डों के के हिसाब से हर गली मोहल्ले में घर घर शराब पहुंचे और युवा शक्ति को शराबी नशेड़ी बनाकर अपने निजी जीवन के साथ-साथ परिवार और समाज को बर्बादी की ओर ले जाना चाहती है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने इस नीति के विरोध में आर्यसमाज का आह्वान करते हुए सरकार से इस नीति को तुरन्त रद्द कराने के लिए दिल्ली के सभी विधायकों, निगम पार्षदों एवं लोकसभा-राज्यसभा के सांसदों के साथ-साथ मुख्यमन्त्री, उपमुख्यमन्त्री, उपराज्यपाल एवं दिल्ली सरकार सभी मन्त्रियों को कड़ा विरोधपत्र भेजने की अपील की।

इसके लिए दिल्ली के सभी विधायकों एवं सांसदों को स्वयं आगे आना चाहिए और इसका पुरजोर विरोध करना चाहिए, नहीं तो आने वाला समय युवा शक्ति के लिए बड़ा खतरनाक सिद्ध होगा।

नव सस्येष्टि यज्ञ होलिकोत्सव की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ

हमारी वैदिक पर्व पद्धति में नवसयेष्टि (होली) पर्व का विशेष महत्व है। दिल्ली में हर वर्ष हम आर्य जन मिलजुल कर बड़े उमंग, उत्साह से इस पर्व को मनाते आए हैं, इस अवसर पर पूरी दिल्ली की आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्त्ता और सदस्यों द्वारा मिलकर नवसस्येष्टि यज्ञ करना, आर्य विद्याललयों के बच्चों द्वारा विभिन्न प्रेरक सांस्कृतिक कार्यक्रमों, सारगर्भित नाटक, नाटिकाओं की प्रस्तुति, एक दूसरे को चन्दन का तिलक लगाना, बधाई देना, हास्य कवियों की कविताओं को सुनना आदि कार्यक्रमों का आयोजन इस पर्व के विशेष आकर्षण पूर्ण बिंदु होते हैं। किंतु कोरोना महामारी के कारण पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी भारत सरकार के निर्देश और दुबारा कोरोना के बढ़ते प्रभाव के कारण दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा होली का सामूहिक आयोजन नहीं कर रही है। अत: सभी आर्य समाजों के अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं, सदस्यों, आर्यजनों को नवस्सयेष्टि होली पर्व की हार्दिक बधाई - बहुत बहुत शुभकामनाएं और साथ में यह विशेष अनुरोध की आप सब इस पर्व को भारत सरकार के निर्देशो का पालन करते हुए अपने अपने स्तर पर यज्ञ आदि करके अवश्य मनाएं और अपना, अपने परिवार और आर्य समाज परिवार का पूरा ध्यान रखें, सब सुखी रहें, सब निरोग रहें, सबको पुन: बहुत बहुत शुभकामनाएं। - **सम्पादक**

विशेष सूचना - कृपया ध्यान दें
कोविड-19 हेतु जारी दिशा-निर्देशों के कारण इस वर्ष

आयोजित नहीं किया जाएगा।

सम्पादकीय

डासना के मन्दिर में गैर हिन्दुओं को प्रवेश न देने की खबर की चर्चा

वो तुम्हें मन्दिर से भगाएं तुम उन्हें मजारों से भगाओ

मस्जिद कमेटी का खास जरूरी एलान ये मस्जिद सुन्नी, हनफी सहीहुल अकीदा लोगों की है हुज़ूर के फरमान सहाबा के तरीके गौसी ख्वाजा मरदूम पाक खुसुसून मसलके आला हजरत इमाम अहमद खां रजा बरेलवी के पैरोकार है। यहाँ पर देवबंदी, वहाबी, तबलीगी व दीगर बंद अकीदा के लोग इस मस्जिद में ना आयें अगर वह आते हैं तो नतीजे के जिम्मेदार वह खुद होंगे। ये बोर्ड उन वामपंथी मीडिया और मुसलमानों को पढ़ लेना चाहिए जो डासना के देवी मंदिर में मुसलमान के वर्जित प्रवेश को हैडलाइन बनाये बैठे हैं।

- शेष पृष्ठ 2 पर

....एक और मस्जिद है जिसके बाहर लगा बोर्ड इस्लाम के जातिवाद का कवर उतारकर फेंक रहा है। इस मस्जिद के बाहर बड़े अक्षरों में लिखा है मसलके आला हजरत जिंदाबाद खबरदार ये मस्जिद अहले सुन्नत वल जमायत की है। इस मस्जिद में वहाबी, देवबंदी, जमाती, अहले हदीस, तबलीगी जमातों व तमाम बद मजहबों यानि हिन्दू सिख इसाई का आना सख्त मना है। पकड़े जाने पर कार्रवाही की जाएगी जिसका जिम्मेदार व खुद होगा।..... केवल मस्जिदें ही नहीं इनके शादी के कार्ड पर भी इनकी मानसिकता छापी जाती है। शेख सिराजुदीन और और शबाना बेगम की शादी का एक कार्ड देखा जिस पर स्पेशल लिखा था कि देवबंदी वहाबी सुलह कुल्ली का आना सख्त मना है जिसको ये बुरा लगे वह भी ना आये।.....

देववाणी - संस्कृत **वेद-स्वाध्याय**

हे मनुष्यों

प्र ते पूर्वाणि करणानि विप्राऽऽविद्वाँ हि विदुषे करांसि।
यथायथा वृष्ण्यानि स्वगूर्तापांसि राजन् नर्य्याविवेषीः।। ऋक्० 4/19/10
ऋषिः वामदेवः।। देवता - इन्द्रः।। छन्दः पक्तिः।।

शब्दार्थ - राजन् = हे सच्चे राजन्! **यथायथा** = ज्यों-ज्यों तू **वृष्ण्यानि**= बलकारक **स्वगूर्ता**= स्वयं अन्दर से निकले **नर्या** = मनुष्यों के हितकारी **अपांसि** = कर्मो को **अविवेषीः** = व्याप्त करता है, त्यों-त्यों **विप्र** = हे सर्वज्ञानमय! **ते** = तेरे **पूर्वाणि करणानि** = सनातन कर्मों, कर्म - साधनों को **आविद्वान्** = प्रत्यक्ष समझनेवाला ज्ञानी **करांसि** = कार्यो को, कर्तव्यकर्मो को **विदुषे** = समझनेवाले ज्ञानी के लिए **प्र आह** = अधिकाधिक प्रकर्ष से कह सकता है , कहता है , कथा = चर्चा करता है।

विनय - हे इन्द्र! तुम हमारे कर्मों में बसते हो, परन्तु तुम्हारा निवास हमारे उन्हीं श्रेष्ठ कर्मों में होता है जो स्वयं हमारे अन्दर से निकले 'स्वपूर्त' होते हैं, जो सब नरों के हितकारी 'पर्व' होते है और जो बलकारक (शक्ति बढ़ानेवाले) 'वृष्ण्य' कर्म होते हैं । यों कहना चाहिए कि तुम्हारे निवास के कारण ही हमारे कर्मों में यह श्रेष्ठता और शक्ति उत्पन्न होती है। धन्य हैं वे पुरुष जिनके कर्मों में तुम इस प्रकार व्याप्ते हो, आविष्ट होते हो। हे राजन्! ज्यों-ज्यों तुम किसी मनुष्य के कर्मों में इस प्रकार विराजने लगते हो, त्यों-त्यों उसका कर्म-सामर्थ्य बढ़ता जाता है, त्यों-त्यों उसके कर्म का प्रवाह अधिक-से-अधिक क्षेत्र को घेरता जाता है। अन्त में उसका मानसिक कर्म, उसका ज्ञान अत्यन्त व्यापक और तेजस्वी हो जाता है, उसके ज्ञान-कर्म में भी तुम्हारा निवास हो जाता है, अतः वही मनुष्य होता है जो ठीक - ठीक कर्तव्य - कर्मो को जान सकता है और दूसरों को बतला सकता है, क्योंकि तब वह हे विप्र! तुम्हारे पूर्व कारणों का भी पूरा जाननेवाला 'अविद्वान्' हो जाता है । तुम्हारा जो इस संसार में सनातन कर्म चल रहा है और वह जिन सनातन शुद्ध साधनों, करणों से चल रहा है उसे वह साक्षात् जानने लगता है, अतः वही बता सकता है कि अमुक समय में कर्तव्य कर्म क्या है, वही दूसरों का पथप्रदर्शक हो सकता है, वही सच्चे ज्ञान का उपदेश हो सकता है, वही है जो सच्चे अर्थो में भविष्यवाणी कर सकता है, तेरे सनातन करणों को जानने के कारण बता सकता है कि तेरी सृष्टि में अब तेरा क्या कर्म होने वाला है। निःसन्देह ये बातें आम लोगों से करने की नहीं होती। 'आविद्वान्' की इन बातों को विद्वान् ही समझ सकता है । विद्वान् पुरुष ही परस्सर, हे सर्वज्ञ! तेरे इन करणों व करणीयों की कथा - चर्चा किया करते हैं, पर ज्ञान की यह उच्च अवस्था उन्हीं पुरुषों को प्राप्त होती है है जिनके कर्मों में तुम्हारा निवास हो जाता है। जितना-जितना किसी के कर्म तुमसे व्यास होने लगते है उतना उतना ही उसमें सच्चा ज्ञान प्रकट होने लगता है। इसलिए, हे मनुष्यो। देखो, ज्ञान के साथ कर्म के इस सम्बन्ध को देखो, अपने कर्मो को बिना विशुद्ध किये प्रभु की बात करने का अधिकारी नहीं हो सकता। कोई मनुष्य ज्ञानोपदेष्टा नहीं बन सकता। अपने कर्मो में प्रभु को बसाये बिना कोई मनुष्य प्रभु की बात करने का अधिकारी नहीं हो सकता।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

प्रथम पृष्ठ का शेष

वो तुम्हें मन्दिर से भगाएं तुम उन्हें मजारों....

कई दिन से देश में नई समस्या खड़ी हो गयी कि डासना मंदिर के बाहर बोर्ड क्यों लगा है कि मुस्लिम मंदिर में ना आये। डासना के मंदिर से पानी पीने के लिए पीटे गये मुस्लिम लड़के की खबर को विदेशी मीडिया ने, खासकर मुस्लिम देशों की मीडिया ने प्रमुखता से छापा है। पाकिस्तान के अंग्रेजी अखबार डॉन, बांग्लादेश के अंग्रेजी भाषा के दैनिक अखबार ढाका ट्रिब्यून, ब्रिटेन के अखबार द मुस्लिम न्यूज, अरब के अल जरीरा और बीबीसी समेत अन्य अखबारों ने इस खबर ऐसे दिखाया मानो कोई बहुत बड़ा कांड हो गया। जबकि इस्लाम में सभी फिरके अपनी अपनी मस्जिद में बाहर बोर्ड टांग कर बैठे हैं कि सुन्नी की मस्जिद में शिया ना आये। शिया की मस्जिद में सुन्नी ना घुसे। बरेलवी की मस्जिद में देवबंदी घुसे तो जान-माल की खैर नहीं और देवबंदी की मस्जिद में अगर बरेलवी घुसे तो जलील कर देंगे।

ये बात हम किसी पूर्वाग्रह का शिकार होकर नहीं कह रहे हैं बल्कि उन लोगों के नयन चक्षु खोलना चाहते हैं जो मंदिर में मुसलमान के प्रवेश की पाबंदी को साम्प्रदायिक बता बता कर टीवी चैनलों पर आपा पीट रहे हैं। करेहपारा रतनपुर इस मस्जिद के बाहर बोर्ड लगा हुआ है कि सलातो वसल्लामो अलेक या रसुल्लाह मसलके आला हजरत सुन्नी हनफी बरेलवी मिल्लत जामा मस्जिद करेहपारा रतनपुर। यह मस्जिद सुन्नी सहीहुल अकीदा मुसलमानों की है। यहाँ के नमाज पढने वालों का तरीका मसलके आला हजरत के तरीके से पढ़ते हैं, इस मसलक के खिलाफ करने वाले देवबंदी, वहाबी, कादयानी, शिया जैसे बद अकीदों का इस मस्जिद में आना सख्त मना है। नीचे पता दिया गया है मुस्लिम जमात जामा मस्जिद करेहपारा रतनपुर।

एक दूसरी जामा मस्जिद भी है। इन्होने बाहर एक बड़ा साइन बोर्ड लगाया है कि मसलके आला हजरत अहले सुन्नत वल जमात जामा मस्जिद बालोद। ये लिखते हैं कि 'इस मस्जिद में देवबंदी, वहाबी, नज्दी, तबलीकी जमात, गुस्ताखे रसूल का आना सख्त मना है।'- इंतेजामिया कमेटी बालोद। एक अन्य मस्जिद के बाहर लिखा है कि 'तमाम फिरका ए बातला मसलन देवबंदी, वहाबी, राफजी व गैर मुकलिल्दों का इस मस्जिद में आना सख्त मना है' - कमेटी मस्जिद खजूर वाली कब्रिस्तान अशरफ खां बरेली।

इसके अलावा हुसेनी मस्जिद सनावद वालों ने तो इस्लाम का अन्दुरुनी काला चिटठा खोलकर बाहर ही रख दिया इन्होंने लिखा है कि यह मस्जिद आशिकाने रसूल सुन्नी हनफी चिस्ती मसलके आला हजरत व बुर्जग्राने दिन के मानने वालों की है। यहाँ पर तमाम गुस्ताखे खुदा व रसूल का आना सख्त मना है जैसे वहाबी, देवबंदी, तबलीगी, जमाती, गैर जमाती, गैर मुक्क्लीद व अहले खबीस का आना सख्त सख्त सख्त मना है। अगर गलती से आ जाये तो जलील करके निकाला जायेगा। नीचे लिखा है मिन जानिब तमाम आशिकाने रसूल व मुतवल्ली।

ये कोई एक दो जगह का किस्सा नहीं है। आप इनकी मस्जिदों के बाहर लगे ऐसे बोर्डों को पढ़ सकते हैं। एक और मस्जिद है जिसके बाहर लगा ये साइन बोर्ड इस्लाम के जातिवाद का कवर उतारकर फेंक रहा है। इस मस्जिद के बाहर बड़े अक्षरों में लिखा है मसलके आला हजरत जिंदाबाद खबरदार ये मस्जिद अहले सुन्नत वल जमायत की है। इस मस्जिद में वहाबी, देवबंदी, जमाती, अहले हदीस, तबलीगी जमातों व तमाम बद मजहबों यानि हिन्दू, सिख, इसाई का आना सख्त मना है। पकड़े जाने पर कार्रवाही की जाएगी जिसका जिम्मेदार व खुद होगा।

केवल मस्जिदें ही नहीं इनके शादी के कार्ड पर भी इनकी मानसिकता छापी जाती है। शेख सिराजुदीन और और शबाना बेगम की शादी का एक कार्ड देखा, जिस पर स्पेशल लिखा था कि देवबंदी वहाबी, सुलह कुल्ली का आना सख्त मना है जिसको ये बुरा लगे वह भी ना आये।

केवल शादी के कार्ड और मस्जिदे ही नहीं एक अल्लाह की बात करने वाले मुसलमान कब्रिस्तान में भी आपस में लठ बजा रहे है और शोर मचा रहे है कि डासना के देवी मंदिर के बाहर मुसलमानों को रोकने के लिए बोर्ड क्यों लटका दिया है।

कब्रिस्तान के हाल ये है कि सुन्नी, शियाओं और अहमदिया, कदयानियों के कब्रिस्तान में मुर्दे नहीं दफना सकते। कब्रिस्तान के बाहर भी ऐसे बोर्ड या दीवारों पर लिखा जाता है कि यह कब्रिस्तान सुन्नियों का है वहाबी देवबंदियों व अन्य फिरकों का दफनाना मना है, नहीं तो सख्त कार्रवाही की जाएगी। अब ये सख्त कार्रवाही क्या होती है पिछले दिनों उदयपुर के एक कब्रिस्तान में मय्यत दफनाने को लेकर हुए विवाद में यह सब सामने आया था। जब मरहूम मोहम्मद यूसुफ की लाश को कब्र से निकाला गया, अपमानित किया गया और उनके पुत्र के घर उनकी लाश फेंक दी गयी थी। क्योंकि मोहम्मद यूसुफ उस फिरके से नहीं था जिस फिरके का यह कब्रिस्तान था।

यानि एक दूसरे की शादी में नहीं जा सकते एक दूसरे के कब्रिस्तानों से गड़े मुर्दे उखाड़ रहे है, मस्जिदों के बाहर बोर्ड लटकाए बैठे है कि किसे मस्जिद में आने देना है किसे नहीं। लेकिन समस्या ये है कि मंदिर के बाहर बोर्ड क्यों लगा दिया कि मुसलमान का प्रवेश वर्जित है।

समस्या यहाँ तक भी होती निपटारा हो जाता है लेकिन जब अगर किसी मुसलमान को मंदिर में जाने दिया जाता है तो उसका क्या होता है दरअसल कुछ समय पहले उत्तर प्रदेश के बागपत जिले के रंछाड गाँव का बाबू खान कुछ समय पहले मंदिर में गया और भगवान शिव का जलाभिषेक किया। लेकिन मुसलमानों को यह बात नागवार गुजरी इसके दो दिन बाद जब बाबू खान मस्जिद गया तो उसे मस्जिद ये कहकर बाहर फेंक दिया कि मुसलमान होकर मंदिर क्यों गया।

मसलन मंदिर में जाने दिया तो समस्या और नहीं जाने दिया तो समस्या। अब इस समस्या का ये हल हो सकता है कि अगर हिन्दू मुसलमानों को मंदिर में नहीं जाने देते तो भाई आप लोगों को एक सलाह है कि अपनी मजारों के बाहर बोर्ड लटका दो कि यह मजारें मुसलमानों की हैं और हिन्दुओं का आना सख्त मना है। अगर कोई फिर भी आता है तो उसका डासना वाले आसिफ जैसा व्यवहार करो, विडियो डालो और बताओ कि ये मना करने के बावजूद भी मजार पर आया था।

- ***सम्पादक***

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

मिलन पर्व - नव सस्येष्टी होली के पर अवसर पर विशेष स्मरण

'वासन्ती नवसस्येष्टि (होली) नए अन्न की खुशियां मनाने का पर्व'

.....मनुष्य का शरीर अन्नमय है। गेहूं सभी प्रकार के अन्नों का प्रतीक प्रमुख अन्न है। गेहूं के आटे से अनेक प्रकार के व्यंजन रोटी, पूरी, पराठा तथा मैदा व सूजी से अनेक पदार्थ बनते हैं। यह अन्न गेहूं व जौं भी होली के अवसर पर हमारे खेतों में पककर तैयार हो जाता है। गेहूं की बालियों में जो गेहूं के दाने होते हैं उन्हें होला कहा जाता है। इसी नाम का कुछ कुछ विकृत रूप होली बना है। किसी गेहूं व अन्य अन्नों को उत्पन्न करने में किसान को खेतों की जुताई, बुआई, उसमें खाद डालना, जल से सिंचाई करना, निराई व गुडाई करना, फसल की पशुओं से रक्षा करना, कीटों आदि से भी उसे बचाना, पक जाने पर कटाई करना और फिर उसमें से अन्न के दानों को निकालना और उसमें से विजातीय पदार्थों को पृथक करना आदि अनेक काम करने पड़ते हैं। किसान न केवल अन्न से अपने व परिवार के शरीरों का पोषण करते हैं अपितु देश के अन्य सभी लोगों को भी भोजन कराते हैं। वस्तुतः राजनीति व स्वार्थ से दूर ऐसे कृषक ही देश के अन्नदाता हैं। .....

- मनमोहन कुमार आर्य

वैदिक पर्व पद्धति में वासन्ती नवसस्येष्टि होली पर्व का विशेष महत्व है। इस पर्व को मनाने की वैदिक परंपरा के अनुसार फाल्गुन मास की पूर्णिमा को प्रातःकाल नए पीले या सफेद वस्त्र पहनकर सामान्य होम करके नवसस्येष्टि के मंत्रों से स्थालीपाक की 31 विशेष आहुतियां देवें। इस विशेष यज्ञ में नए अन्न गेहूं अथवा जौ से निर्मित मोहन भोग, (हलवा) होना चाहिए। हवन सामग्री में भी जौ विशेष मिलाकर आहुति देना श्रेष्ठ माना गया है। जबकि आजकल इस अवसर पर होलिका दहन की परम्परा भी लम्बे समय से समाज में चली आ रही है। होली प्राचीन काल में ऋषियों व विद्वानों द्वारा किए जाने वाले विशेष यज्ञ का एक बिगड़ा हुआ रूप प्रतीत होता है। हम जानते हैं कि महाभारत युद्ध के बाद देश में अविद्या की वृद्धि और विद्या का नाश उत्तरोत्तर होता रहा। इस दीर्घावधि में परमात्मा से सृष्टि के आरम्भ में प्राप्त चार वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद व इनका ज्ञान तथा मान्यतायें विलुप्त होकर इसके स्थान पर अज्ञान व अन्धविश्वास ने पैर फैलाये व जमाये, जिससे सारे देश व विश्व को अज्ञान के तिमिर ने अन्धकारयुक्त कर दिया। दैवयोग से ईसा की उन्नीसवी शताब्दी के पूर्वार्द्ध में गुजरात के मौरवी राज्य में पं० करशनजी तिवारी जी के घर 12 फरवरी, सन् 1824 को एक बालक मूलशंकर का जन्म हुआ, जिसने मूर्तिपूजा के अन्धविश्वास की वास्तविकता जानने एवं मृत्यु पर विजय पाने के लिये गृह त्याग कर धर्म व अधर्म पर अनुसंधान किया और धर्माधर्म विषयक सभी प्रश्नों के समाधान प्राप्त किये। गृहत्याग के बाद मूलशंकर ने संन्यास लेकर स्वामी दयानन्द सरस्वती (1824-1883) नाम धारण किया और संसार से अविद्या दूर कर देश, समाज व विश्व को अविद्या से मुक्त करने का संकल्प लेकर कार्य किया। उनके अनुसंधान का एक परिणाम यह भी था कि सृष्टि के आरम्भ में अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा को परमात्मा ने एक-एक वेद का ज्ञान दिया था। यह ज्ञान ईश्वर, जीव व प्रकृति के सत्य स्वरूप व गुण, कर्म व स्वभाव पर प्रकाश डालने के साथ मनुष्यों को धर्म व अधर्म से परिचित भी कराता है। वेदों में जो विशेष बातें हैं वह सब धर्म और जो निषिद्ध बातें हैं वह अधर्म हैं। ऋषि दयानन्द ने वेद मन्त्रों के संस्कृत व हिन्दी भाषा में अर्थ किये और लोकभाषा हिन्दी में वैदिक मान्यताओं एवं सिद्धान्तों पर आधारित एक अपूर्व धर्म एवं सामाजिक क्रान्ति करने वाले ग्रन्थ ''सत्यार्थप्रकाश की रचना की। उन्होंने देश व संसार से अविद्या दूर करने के अपने उपाय वा प्रयत्न किये जो आंशिक रूप से सफल हुए। उनके समय में विद्यमान मत-मतान्तरों के असहयोग व हठधर्मिता के कारण विश्व से अविद्या दूर करने का उनका स्वप्न व पुरुषार्थ सफल न हो सका।

ऋषि दयानन्द ने वेदों एवं ऋषियों की मान्यताओं के अनुरूप प्रातः व सायं दैनिक अग्निहोत्र का विधान भी सभी आर्य हिन्दुओं के लिये किया है। प्राचीन काल में सामूहिक रूप से जो यज्ञ किये जाते थे वह महायज्ञ कहे जा सकते हैं और ऐसा प्रतीत होता है कि होली के दिन जो होलिका जलाई जाती है वह उसी महायज्ञ का बिगड़ा हुआ रूप है। इस दिन सभी हिन्दुओं को अपने घरों में अग्निहोत्र करने चाहिये और सभी लोगों को स्थान-स्थान पर सामूहिक महायज्ञों का अनुष्ठान आर्यसमाज के पुरोहितों से कराना चाहिये जिससे हमारा सामाजिक एवं वायुमण्डलीय वातावरण प्रदुषण एवं विकारों से मुक्त हो। यज्ञ में वेदमन्त्रोच्चार से ईश्वर स्तुति, प्रार्थना व उपासना भी होती है। यही होली जलाने का प्रयोजन तर्क व युक्ति पर आधारित प्रतीत होता है।

होली का पर्व ऋतु परिवर्तन का पर्व भी है। हमारे देश में तीन मुख्य ऋतुयें शीत, ग्रीष्म एवं वर्षा हैं। शीत ऋतु में लोग सर्दी से कष्टों का अनुभव करते हैं। वृद्ध लोगों के लिये तो यह जान लेवा भी होती है। अति वृद्ध अनेक लोगों का वियोग भी अतिशीतकाल में होता है। शीत ऋतु के कमजोर पड़ने व ग्रीष्म ऋतु के आरम्भ की संधि फाल्गुन मास की पूर्णिमा और चैत्र माह के कृष्ण पक्ष के प्रथम दिवस को यह पर्व मनाया जाता है। इस समय शीत ऋतु प्रायः समाप्त हो चुकी होती है और ग्रीष्म ऋतु का आरम्भ हो रहा व हो गया होता है। वृक्ष व वनस्पतियां भी अपने पुराने आवरण, पत्तों वा वस्त्रों को छोड़कर नये पत्तों को धारण करती हैं। फूलों से बाग बगीचे भरे हुए होते हैं। सर्वत्र सुगन्ध का प्रसार अनुभव होता है और बाग बगीचों को देखकर स्वर्गिक आनन्द की अनुभूति होती है। ऐसा लगता है कि ईश्वर अपनी कला का नाना प्रकार के रंग बिरंगे फूलों के माध्यम से दर्शन करा रहा है। यह सत्य भी है। रचना को देखकर रचयिता का ज्ञान होता है। वस्तुतः इन रंग बिरंगे फूलों व इनमें सुगन्ध को अनुभव करके हमें इनके उत्पत्तिकर्ता व पालक परमेश्वर का ज्ञान होता है। फूल तो गुण है परन्तु इन गुणों रंग व रूप आदि का गुणी हमें वह परमात्मा प्रतीत होता है। ईश्वर की रचना को देख कर किसी भी सात्विक मनुष्य का सिर ईश्वर की अद्भुद रचना व कला के सम्मुख झुक जाता है। हम समझते हैं कि होली व इसके आसपास के दिनों में मनुष्यों को विविध प्रकार के वृक्षों एवं फूलों के बगीचों में घूमना चाहिये और ईश्वर की रचना को देखकर उसके सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी स्वरूप का ध्यान करना चाहिये। फूलों से प्रेरणा लेकर स्वयं के जीवन को भी सुन्दर, रंग-बिरंगी एवं सुगन्ध से युक्त बनाने का संकल्प लेना चाहिये। इसके लिये मनुष्य को सत्यार्थप्रकाश, उपनिशद, दर्शन, वेद, रामायण, महाभारत, मनुस्मृति आदि ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिये। इनके अध्ययन एवं आचरण से हमारा जीवन सफल होता है।

मनुष्य का शरीर अन्नमय है। गेहूं सभी प्रकार के अन्नों का प्रतीक प्रमुख अन्न है। गेहूं के आटे से अनेक प्रकार के व्यंजन रोटी, पूरी, पराठा तथा मैदा व सूजी से अनेक पदार्थ बनते हैं। यह अन्न गेहूं व जौं भी होली के अवसर पर हमारे खेतों में पककर तैयार हो जाता है। गेहूं की बालियों में जो गेहूं के दाने होते हैं उन्हें होला कहा जाता है। इसी नाम का कुछ कुछ विकृत रूप होली बना है। किसी गेहूं व अन्य अन्नों को उत्पन्न करने में किसान को खेतों की जुताई, बुआई, उसमें खाद डालना, जल से सिंचाई करना, निराई व गुडाई करना, फसल की पशुओं से रक्षा करना, कीटों आदि से भी उसे बचाना, पक जाने पर कटाई करना और फिर उसमें से अन्न के दानों को निकालना और उसमें से विजातीय पदार्थों को पृथक करना आदि अनेक काम करने पड़ते हैं। किसान न केवल अन्न से अपने व परिवार के शरीरों का पोषण करते हैं अपितु देश के अन्य सभी लोगों को भी भोजन कराते हैं। वस्तुतः राजनीति व स्वार्थ से दूर ऐसे कृषक ही देश के अन्नदाता हैं। उनका समाज में अति उच्च स्थान है। स्वाभाविक है जब किसान की फसल तैयार हो गई है तो उसमें प्रसन्नता, उमंग एवं सन्तोष रूपी सुख का भाव होता है। वह इस प्रसन्नता की अभिव्यक्ति ईश्वर को इस फसल के दानों-होलाओं से यज्ञ करके करता है। कालान्तर में यह घटना प्रमुख रूप से नवसस्येष्टि वा होली के पर्व से जुड़ गई है। इसी का कुछ बिगड़ा रूप होली पर्व पर लकड़ियों को एकत्र कर उन्हें रात्रि में जलाने को दर्शाता है। यदि इसी कार्य को दिन में 11-12 बजे या सायं 3-5 बजे के बीच किया जाया करें और इसे वैदिक महायज्ञ का रूप दिया जाये तो यह वर्तमान परिस्थितियों में अधिक सार्थक हो सकता है।

होली को लोग अपने अपने तरीकों से मनाते हैं। इसे आमोद प्रमोद का पर्व

- शेष पृष्ठ 7 पर

प्रेरक प्रसंग

झट क्षमा मांग ली

जब दयानन्द मठ की स्थापना का विचार आपके मन में आया तो आपने आर्य-पत्रों में अपनी योजना रक्खी। इसपर अनेक आर्य नेता वा विद्वानों ने जहाँ आपके विचार का समर्थन किया, वहाँ कुछ एक ने विरोध में भी लेख दिये। ऐसे लोगों में एक थे स्वर्गीय श्री पण्डित भीमसेनजी विद्यालंकार। आप तब पंजाब सभा के मन्त्री थे। सभा के पत्र में आपका एक लेख दयानन्द मठ के विषय पर छपा।

स्वामीजी तब सार्वदेशिक सभा के कार्यकर्त्ता प्रधान थे। आपने पण्डित भीमसेनजी के लेख का उत्तर देते हुए एक लेख में लिखा- सभा मन्त्रीजी ऐसा लिखते हैं आदि आदि। इस पर पण्डित भीमसेनजी का लेख छपा कि ये मेरे निजी विचार थे। मैंने सभामन्त्री के रूप में ऐसा नहीं लिखा। क्या स्वामीजी के लेख को मैं सार्वदेशिक के कार्यकर्त्ता प्रधान का लेख जानूँ? पण्डितजी ने स्वामीजी के लेख पर इस आधार पर बड़ी आपत्ति की।

श्री स्वामीजी ने इसपर एक और लेख दिया। उसमें आपने लिखा कि चूँकि लेख सम्पादकीय के पृष्ठ पर छपा था- जिस पृष्ठ पर सभामन्त्री के नाते वे यदा-कदा लिखा करते थे, अतः मैंने इस सभामन्त्री का लेख जाना। मेरा जो भी लेख सार्वदेशिक के अधिकारी के रूप में होगा, उसके नीचे मैं कार्यकर्त्ता प्रधान लिखूँगा।

मैंने पण्डितजी के लेख को सभामन्त्री का लेख समझा, यह मेरी भूल थी। इसलिए मैं पण्डितजी से क्षमा माँगता हूँ। कितने विशाल हृदय के थे हमारे महापुरुष। उनके बड़प्पन का परिचय उनके पद न थे अपितु उनका व्यवहार था। वे पदों के कारण ऊँचे नहीं उठे, उनके कारण उनके पदों की शोभा थी।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव के उपलक्ष्य में भव्य ऋषि मेला सम्पन्न

आर्यसन्देश टीवी, यूट्यूब, फेसबुक एंव अन्य संचार माध्यम से लाखों आर्यजनों ने देखा सीधा प्रसारण

दिनांक 11 मार्च, 2021 अपराह्न 3.30 बजे दिल्ली की समस्त आर्य समाज, शिक्षण संस्थानों-आर्य विद्यालयों व गुरुकुलों की ओर से आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्वावधान में ऋषि बोधोत्सव एवं महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में भव्य ऋषि मेला रघुमल आर्य कन्या विद्यालय, राजा बाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ आचार्य सूर्य देव शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ से हुआ। इस अवसर पर आर्य संन्यासी स्वामी विवेकानंद परिव्राजक जी ने ध्वजारोहण करके कार्यक्रम का औपचारिक शुभारम्भ किया।

स्वामी विवेकानंद परिव्राजक जी ने अपने आशीर्वाद स्वरूप सभी उपस्थित आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमें महर्षि द्वारा दिखाए मार्ग पर चलते हुए न केवल अपना जीवन उज्जवल करना है बल्कि सभी देशवासियों को वेद के मार्ग पर लाना है तभी हम सुख, समृद्धि को प्राप्त कर सकते हैं।

श्रीमती संगीता जी ने अपनी साथी श्रीमती पुष्पा जी, श्री जवाहर जी तथा श्री अजय शर्मा जी के साथ प्रभु भक्ति तथा महर्षि दयानंद को श्रद्धा सुमन देते हुए बहुत ही सुंदर भजन सुनाए।

आचार्य अमोल शास्त्री जी ने महर्षि देव दयानन्द सरस्वती जी द्वारा सामाजिक क्रांति हेतु किए कार्यों पर अपने विचार व्यक्त किए।

मंच पर उपस्थित आर्यजनों के सामने मिथिला नरेश ऋषिराज जनक के दरबार को उपस्थित किया गया। नाट्य रूपांतर के रूप में जिसमें वेदों के ऊपर शास्त्रार्थ हो रहा था, बहुत ही सुंदर मंचन बच्चों ने किया और ब्रह्मज्ञानी यज्ञवक्ल्य तथा विदुषी गार्गी के संवाद प्रस्तुत किए। ये लगभग सभी 24 बच्चे आर्य समाज कीर्ति नगर से जुड़े हुए हैं तथा श्रोताओं की वाह-वाह तथा आशीर्वाद प्राप्त किया उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने इस संवाद शैली को सराहा तथा बच्चों को आशीर्वाद दिया। बच्चों को प्रोत्साहित करते हुए श्री कीर्ति शर्मा, उपप्रधान जी ने 1000/- रुपये तथा श्रीमती रचना आहूजा जी ने 500/- रुपये प्रदान किए।

इस पर अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा के व.उपप्रधान श्री सुरेंद्र रैली जी, उपप्रधान श्री कीर्ति शर्मा जी, कोषाध्यक्ष श्री अरुण वर्मा जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, उपप्रधान श्री शिवकुमार मदान जी एवं महामंत्री श्री विनय आर्य जी तथा रधुमल आर्य कन्या विद्यालय के अधिकारी श्री संजय जी उपस्थित रहे।

यज्ञमान के रूप में श्रीमती सुधा एवं श्री सुरेंद्र आर्य जी, प्रधान, वेद प्रचार मंडल, उत्तर पश्चिमी दिल्ली, श्रीमती कांता एवं श्री अशोक कुमार वर्मा जी (सदस्य, प्रबन्धन समिति, रधुमल आर्य कन्या विद्यालय), श्रीमती सरला एवं श्री शिव शंकर गुप्ता जी (मंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) तथा श्रीमती इंदिरा एवं श्री राजेश मेंदीरत्ता जी (प्रधान, आर्य समाज लाजपत नगर) ने भक्ति भाव से उस परमपिता परमात्मा का स्मरण करते हुए धन्यवाद दिया कि वह इतने सुंदर

- शेष पृष्ठ 8 पर

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली द्वारा आयोजित ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ध्वजारोहरण करते स्वामी विवेकानन्द जी। हवन करते हुए यज्ञमान परिवार एवं महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर आधारित नाटिका की प्रस्तुति के दृश्य

अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के नए संस्करण का लोकापर्ण

आर्य प्रकाशन द्वारा प्रकाशित बृहद सत्यार्थ प्रकाश का अवलोन करते हुए सिक्किम के महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी। साथ मे हैं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी, आर्य प्रकाशन के प्रमुख श्री सुभाष कोहली जी, श्री संजीव आर्य जी एवं अन्य महानुभाव। महामहिम ने महर्षि दयानन्द की इस अनुपम कृति की हृदय से प्रशंसा की।

आप भी बनें यज्ञमित्र
कम से कम 12
नए परिवारों में यज्ञ कराएं
दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
एन.सी.आर. में यज्ञमित्र बनने के लिए सम्पर्क करें-
श्री सतीश आर्य जी
महामन्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली
मो. 954004141, 9313013123

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मोत्सव मनाया,31 कुण्डीय महायज्ञ का आयोजन

अलवर (का.सं.)

आर्य कन्या विद्यालय समिति, श्री रामजीलाल आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर जिले के समस्त आर्य समाज एवं जन सहयोग से महर्षि दयानन्द सरस्वती का 197वां जन्मोत्सव को अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों और वेद प्रचार, पर्यावरण शुद्धि, विश्वशांति, सुख समृद्धि एवं महिला सशक्तिकरण हेतु रविवार प्रात: 9 बजे वैदिक विद्या मन्दिर स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में 31 कुण्डीय महायज्ञ का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि अनुभव शर्मा-अतिरिक्त जिला सत्र न्यायाधीश, हरियाणा, प्रजिडिंग ऑफिसर राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग दिल्ली, अध्यक्ष हरियाणा जज एसोसिएन एवं अतिथियो को मंत्री प्रदीप कुमार आर्य ने पीत वस्त्र अर्पित कर स्वागत किया। कमला शर्मा, निदेशक आर्य कन्या विद्यालय समिति ने सभी को ध्वजारोहण के लिए आमंत्रित किया। यज्ञ स्थल वैदिक विद्या मन्दिर, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर पर मुख्य अतिथि अनुभव शर्मा एवं जगदीश प्रसाद गुप्ता, प्रधान, आर्य कन्या विद्यालय

समिति, अलवर ने यज्ञ प्रारम्भ किया। मुख्य अतिथि अनुभव शर्मा, डॉ. प्रशान्त आचार्य एवं समिति प्रदाधिकारियों द्वारा समिति कलैन्डर का विमोचन किया गया। मुख्य अतिथि अनुभव शर्मा-अतिरिक्त जिला सत्र न्यायाधीश, हरियाणा यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डाला।

कुरआन में गैर मुस्लिमों के प्रति हिंसा का सन्देश

फिर गूंजा 26 आयत का किस्सा

....देखा जाये तो छठी सातवीं सदी में अरब में कबीलाई समाज था, जिसमें रहने वाले लोगों के अपने रीति रिवाज थे। पढ़े लिखे लोग नहीं थे कबीलों में रहते थे अधिकांश लूटपाट का कार्य था। अचानक वहां इस्लाम के राजनीतिक विचारों को धार्मिकता का जामा पहनाकर कुरान के नियम इन कबिलाई समाज को संचालित करने लगे। यह रहस्य भी किसी से छिपा नहीं है कि इन तरीकों को थोपने या अपनाने के लिए हिंसा का भी इस्तेमाल किया जैसे कि वर्तमान में तालिबान, अल-शबाब, बोको हरम, इस्लामिक स्टेट समेत अन्य कट्टर आतंकी इस्लामिक संगठन इसी सातवीं ञाताब्दी के इस्लाम को आधुनिक दुनिया के ऊपर थोपने में हिंसा का रास्ता अपनाने से नहीं चूक रहे है।....

साल था 1963 जर्मनी के एक लेखक थे कर्ट फ्रिस्ल्लर इन्होंने एक किताब लिखी आयशा बैरी एंड रॉकलिफ पब्लिकेशन ने इसे प्रकाशित किया। यह पुस्तक इस्लामी नबी की एक पत्नी आयशा के ऊपर लिखी गई थी। हालाँकि इसका असली वर्जन जर्मन भाषा में था। किताब का पूरा नाम था आयशा मुहम्मद की सबसे पसंदीदा बीवी, जैसे ही यह पुस्तक बाजार में आई इस पर बहस हुई कि ये मुस्लिमों की भावनाओं को आहत करने वाली किताब है। मुहम्मद की पत्नी आयशा की कम उम्र होने की बात पर काफी विवाद पहले भी हुए हैं। इस किताब को बैन किया गया और इसके आयात पर भी पाबंदी लगा दी गयी।

आयशा पुस्तक को बैन इसलिए किया गया क्योंकि इससे उनकी भावनाएं आहत हुई थी, भावनाएं यानि इनके मन की एक धारणा जिसे आस्था से दिन में पांच बार महीने में 150 बार और साल में 1825 बार मजबूत किया जाता है, जिसमें शुक्रवार को स्पेशल डोज दी जाती है, वो भावना आहत हो गयी। इतने ही ग्रैंड लेवल का एग्रेशन होता है मुस्लिम समाज में। जहां कहीं भी इस्लाम का मसला आ जाता है, भावुकता के नाम पर हिंसक हो जाते हैं, अब हिंसक ना हों इसके लिए अब शिया वक्फ बोर्ड के पूर्व चेयरमैन वसीम रिजवी ने कुरान की 26 आयतों को हटाने से संबंधित एक जनहित याचिका सुप्रीम कोर्ट में दाखिल की है। इसके साथ ही रिजवी ने कुछ आयतों को आतंकवाद को बढ़ावा देने वाली बताया है। उनका दावा है कि ये आयतें कुरान में बाद में शामिल की गई हैं। वसीम रिजवी के इस कदम से मुस्लिम समाज का भावुकता के नाम पर गुस्सा भड़क गया है, कोई एक राहत मोलाई कोमी एकता संगठन है उसकी ओर से उसके पूर्व अध्यक्ष अमीरुल हसन ने वसीम रिजवी का सिर काटककर लाने वाले को 11 लाख रुपए का इनाम देने का ऐलान किया है।

यानि आयतें ना हटाये जाने के विरोध में मुस्लिम समाज का एक बड़ा हिस्सा खड़ा हो गया है, ऐसे में सवाल उठ जाता है कि ये आयतें क्या हैं और इनसे इन लोगों को क्या लाभ है। पहले आयतें सुन लीजिये, हालाँकि इन आयतों को बोलने का एक किस्म से पेटेंट मौलाना लिए बैठे है वो बोले तो इस्लाम का प्रचार अगर कोई उनके अलावा इनकी व्याख्या करने की कोशिश करें तो भावना आहत हो जाती है। और जब जब भावना आहत होती है तो फिर अमीरुल हसन खड़ा होकर वसीम रिजवी जैसे उदार मुसलमान का सिर काटककर लाने वाले को 11 लाख रुपए का इनाम देने का ऐलान कर देता है।

पर जब इन आयतों को देखते हैं तो सवाल खड़ा होता है कि आज के युग में इन आयतों का क्या रोल है या इनकी क्या और किसे जरूरत है? जैसे एक आयत में लिखा है कि फिर, जब हुरमत (रमजान) के महीने बीत जाऐं तो मुश्रिको को जहाँ-कहीं पाओ कत्ल करो और पकड़ो और उन्हें घेरो और हर घातकी जगह उनकी ताक में बैठो फिर यदि वे तौबा कर लें, नमाज कायम करें और, जकात दें तो उनका मार्ग छोड़ दो। नि:संदेह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है। एक आयत है हे ईमान लाने वालो! मुश्रिक यानि मूर्तिपूजक नापाक हैं, इसके अलावा एक और आयत है नि:संदेह काफिर तुम्हारे खुले दुश्मन हैं, यही नहीं कुछ और भी आयत है जैसे हे ईमान' लाने वालों! (मुसलमानों) उन काफिरों से लड़ो जो तुम्हारे आस पास हैं और चाहिए कि वे तुममें सखती पायें।

आगे देखें तो एक और भी आयत है जो कहती है जिन लोगों ने हमारी आयतों का इन्कार किया, उन्हें हम जल्द अग्नि में झोंक देंगे, जब उनकी खालें पक जाएंगी तो हम उन्हें दूसरी खालों से बदल देंगे ताकि वे यातना का रसास्वादन कर लें, मसलन ऐसी ऐसी करीब 24 से 26 आयतें है जिन्हें पढ़कर कोई भी इन्सान अपने मूल स्वभाव से अलग हटकर हिंसक हो सकता है या वो हिंसा कर सकता है। शायद इसी कारण काइरो विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर हसन हनाफी ने एक बार इसे इस प्रकार कहा था कि मुसलमानों के नजर में कुरान एक सुपरमार्केट है जहाँ से जिसे जो चाहिये वह उठा लेता है और जो नहीं चाहिये वह छोड देता है। आतंकी संगठन भी यही से शिक्षा लेते है और

- शेष पृष्ठ 7 पर

स्वास्थ्य रक्षा

बढ़ते मोटापे के कारण और निवारण

शरीर का गोल-मटोल हो जाना अथवा बड़े आकार के स्थूल होने पर वसा का अधिक हो जाना ही प्रचलित भाषा में ओबेसिटी या मोटापा के नाम से जाना जाता है। आजकल मोटापा बढ़ता ही जा रहा है, इसके लिए गलत रहन- सहन, आलस्यमय जीवन, परिश्रम का अभाव, सुबह देर से जागना एवं देर रात्रि में देर से सोना, शरीर में अम्लता की अधिकता का होना, अधिक पौष्टिक- वसायुक्त आहार का सेवन करना, पाचन क्रिया का बिगडना, लगातार कब्ज रहना, अधिक बिना सोचे समझे बार-बार खाते रहना, कैलोरीयुक्त आहार जैसे चीनी, घी- तेल, मक्खन, ब्रेड, आईसक्रीम, साक्टड्रिंक्स, कन्फेक्शनरी आहार, मैदे के एवं तले हुए पदार्थ, मिठाईयां चंकी-बंकी फूड्स, अधिक शर्करा-श्वेतासारयुक्त भोजन जैसे आलू-केला, अधिक चावल, अधिक परिष्कृत आटा, प्रोटीनयुक्त भोजन यह सभी मोटापा-वजन बढ़ाने में सहायक होते हैं। आर्य संदेश के इस अंक में पढिए विस्तारपूर्वक मोटापे के कारण और निवारण। - सम्पादक

1) एक प्रकार से मोटापा रोग को प्राकृतिक जीवन शैली में पूरे शरीर का कब्ज कह सकते है। विजातीय द्रव्य चर्बी के रूप में शरीर के मांसल स्थानों को घेर लेती है एवम् चय-पचय क्रिया को असन्तुलित कर देती है। चर्बी निष्कासन क्रिया कमजोर हो जाती है और शरीर के तन्तु एवं अन्य अवयव शिथिल होकर रक्त की अम्लता को बढ़ा देते हैं जिससे शरीर की मलिनता बढ़ने से मोटे आदमी को तरह-तरह की भयंकर बीमारियां हो जाती हैं।

2) अंत:स्रावी ग्रथियों का असंतुलित होना थायराइड तथा पैराथायरायड ग्रंथियों के स्राव के असंतुलन के कारण शरीर की कोशिकाएं विभाजित हो जाती हैं और कोशिका विभाजन सूत्र के अनुसार दुगुनी वृद्धि होने से मोटापा बढ़ता जाता है।

3) पिट्यूटरी ग्लैंड के हाइपोथैलमिक ट्यूमर या अन्य ट्यूमर के कारण मोटापा होता है। इस रोग से सारे शरीर की हड्डियों की लम्बाई दैत्याकर स्थिति में बढ़ने लगती है। इस रोग को जियानटिज्म कहा जाता है।

4) एड्रिनल ग्रंथि की सूजन या ट्यूमर के कारण इसके हार्मोन का स्राव अनियंत्रित हो जाता है। इसमें गर्दन एवम् स्तन की सूजन बढ़ जाती है। व्यक्ति धीरे-धीरे अधिक मोटा एवं सुस्त हो जाता है। इस रोग को कुशिंग सिण्ड्रोम से पुकारा जाता है।

5) पैंक्रियास के लैंगर हेन्स कोशों के अनियंत्रित हार्मोन स्राव हाइपर इन्सुलिज्म के कारण मोटापा होता है।

6) अधिक दवाईयों एवम् उनके दुष्प्रभाव जन्य युक्त औषधियों से भी मोटापा होता है।

7) वंशानुगत मोटापा - माता-पिता या उनकी सात पीड़ियों के मोटे होने पर भी 80 प्रतिशत मोटापा बढ़ने की संभावना रहती है। इससे बच्चे प्राय: छोटी उम्र में ही मोटे होते पाए जाते हैं। आनुवांशिक मोटापे में सारा शरीर मोटा होता है जबकि अन्य मोटापे में बीच का हिस्सा मोटा होता है।

8) मानसिक मोटापा बाहरी खतरों एवं असुरक्षित परिस्थितियों में व्यक्ति ज्यादा खाने लगता है। फलत: मोटापा बढ़ जाता है।

9) स्त्रियों में अनियमित माहवारी एवम् माहवारी बन्द (मेनोपाज) होने के समय भी मोटापा हो जाता है। गर्भावस्था, परिवार नियोजन एवम् हिस्ट्रोएकटमी एवम् अन्य शल्यक्रिया के बाद भी मोटापा अधिक देखने को मिलता है।

10) एल्कोहल के सेवन से भी मोटापा बढ़ता है। एल्कोहल या बीयर-शराब इत्यादि में कैलोरी की मात्रा बहुत अधिक होती है। एल्कोहल के साथ वसायुक्त भोजन लेने से कैलोरी अधिक मात्रा में शरीर में जाने से मोटापा अधिक बढ़ जाता है।

मोटापे के कारण शरीर की जीवनी शक्ति क्षीण होने के साथ-साथ कई गंभीर रोगों को जन्म देती है:-

1. मधुमेह 2. उच्च रक्तचाप
3. संधिवात 4. रयुमेटिक पेन
5. गठिया 6. श्वास फूलना
7. एसीडिटी 8. गैस्ट्राइटिस
9. हर्निया 10. वेरिकोस वेन्स
11. गुर्दे के विभिन्न रोग
12. अम्लपित्त 13. कमरदर्द
14. सिर दर्द 15. सरवाईकल
16. एन्जाइना
17. मांसपेशियों की जकड़न
18. तनाव 19. उदर रोग
20. नपुंसकता
21. जीवनी शक्ति का ह्रास
22. लकवा इत्यादि।

- शेष अगले अंक में

Continue From Last issue

Makers of the Arya Samaj : Pt. Lekh Ram Ji

At the last anniversary of the Amritsar Arya Samaj he delivered a very fine lecture. In it he compared all the religions of the world with the Vedic religion. He has establ ished Arya Samajees at many places, and convinced many people of the truth of his religion."

In 1887 Pt. Lekh Ram was appointed editor of the *Arya Gazette*. He continued to edit it for two years, and did his work very ably. The result was that the *Arya Gazette* was read not only by the Arya Samajists but by the public in general as well. This position was very useful to him. Since he had not to go out very often, he had enough spare time to get his books published. He also found time to write several new books.

Then Pt. Lekh Ram undertook one of the biggest tasks of his life. Swami Dayanand had been dead for more than four years. Still no good biography of him had been brought out up to that time. It is true some lives of his were to be found in the market, but they did not describe the real Swami. All this grieved theArya Samajists. The Multan Arya Samaj, therefore, passed a resolution that Pt. Lekh Ram should be asked to write a biography of Swami ji. This was accepted by the Provincial Representative Assembly of the Arya Samajees. They asked Pt. Lekh Ram ifhe would undertake this work. He accepted it without the least hesitation.

Pt. Lekh Ram had to go to many parts ofIndia in order to collect material for the biography. Yet this did not dismay him. He was not a person who loved to stay at home. He always liked to see new per sons and new places. Forthis reason he was called theArya Musafir or the Arya Traveller.

The Musafir began his work at Lahore. Here he collected as much information as he could. Then he left for Jalandhar. He met L. Munshi Ram, afterwards known as Swami Shraddhanand, who gave him much valuable information about Swami Dayanand. This also established a real bond offriendship between the two. At this place he also delivered a lecture on the Vedas. This was listened to by a very large number of people.

..... Pt. Lekh Ram was not quite welcome. As soon as he reached there the Arya Samajists appointed four persons to guard him against all kinds of harm. But the Pandit said, "All of you seem to be cowards. You appear to have no faith in yourselves. I do not want anybody to protect my life. Nothing can do me harm, for God protects us all. He was also warned against receiving any Mohammadan visitors. But he did not heed this warning. On the other hand, he delivered several lectures on Islam, which were not to the taste of the Mohamrnadans, Before he left, he asked the Arya Samajists to start a paper of their own. ....

After leaving Jalandhar he went to Mathura. There he met some persons who knew both Swami Virjanand and Swami Dayanand intimately. From them he learnt many interesting facts about the lives of both. At the same time, he delivered some lectures there. In some of these he revealed the beauties of the Vedic religion; and in others he exposed the inconsistencies of other religions.

Ajmer was the next place he visited there he found the Arya Samaj ists in great distress. They had converted a Moharnrnadan to the Vedic religion; and this led to much bitterness between them and the Mohammadans. The Mohammadanshad, therefore, started a journal in which the Arya Samajists were bitterly criticized. Not content with this they had also put up other people against them. All these things made the position oftheArya Samajists very difficult.

Naturally the visit of Pt. Lekh Ram was not quite welcome. As soon as he reached there the Arya Samajists appointed four persons to guard him against all kinds of harm. But the Pandit said, "All of you seem to be cowards. You appear to have no faith in yourselves. I do not want anybody to protect my life. Nothing can do me harm, for God protects us all. He was also warned against receiving any Mohammadan visitors. But he did not heed this warning. On the other hand, he delivered several

पं. लेखराम आर्य मुसाफिर
१८५८-१८९७

lectures on Islam, which were not to the taste of the Mohamrnadans, Before he left, he asked the Arya Samajists to start a paper of their own. They accepted his advice. He contributed several articles to this paper which were afterwards published in book form.

From Ajmer he went to Nasirabad Cantonment. There he again engaged in a discussion with the Mohammadans. But this was stopped by order of the Inspector ofPolice.It so happened, however, that this gentleman died the very next morning. People thought it was the result of some miracle on the part of the Arya preacher. But he at once told them that he did not believe in miracles and superstitions.

After this he went home on leave. But after a few days he set out on his journey again. Meerut was the next place he visited. He stayed there for some days and collected some facts about the life of Swami Dayanand. Then he visited Aligarh. But there he fell ill and had to return to the Punjab.

On his way back he stopped at Jalandhar and stayed with. Dev Raj, the founder of a college for girls. He and L Munshi Ram nursed him with great care. As soon as the fever left him, he thought of returning to his work again. But his friends would not let him do so. He soon received a call from Nakodar, however. It was so urgent that he found it difficult to resist.

At Nakodar there lived a Hindu official in the Revenue department. He had turned Mohammadan only a few days before. He wanted to discuss things with somebody. The people of that place wrote to Pt. Lekh Ram about it. He at once set off, even at the cost of his health.

From there Pandit j i went to Lahore. After staying at Lahore for a few days he went to Saharanpur. After this he visited Kanpur and Allahabad. AtAllahabad he paid a visit to the Vedic Press founded by Swami Dayanand. He found that things there were not as they should be. Some ofthe people were doing things which were compromising the position of Swami Dayanand. They were publishing things under his name which were not really his. This upset Pt. Lekh Ram very much. He reprimanded them for their deceit. He also saw to it that nothing was to be published in future which had not been carefully gone through by a committee ofleading and learned Arya Samajists.

To be continued.....

With thanks By:
"Makers of Arya Samaj"

संस्कृत वाक्य प्रबोध — देश-देशान्तर प्रकरणम्

गतांक से आगे - संस्कृत	हिन्दी
121. अहमपि सभवत: सर्वानेतान्निमन्त्रयितुमिच्छामि।	मैं भी आपके समेत इन सबका निमन्त्रण करना चाहता हूं।
122. अस्माभिर्भवन्निमन्त्रणमूरीकृतम्।	हमने आपका निमन्त्रण स्वीकार किया।
123. प्रीतोऽस्मि परन्तु भवद्भोजनार्थं किं किं पक्तव्यम् ?	आपके निमन्त्रण मानने से मैं बड़ा प्रसन्न हुआ परन्तु आपके भोजन के लिये क्या-क्या पकाया जाए ?
124. यद्यद्भोक्तुमिच्छास्ति तत्तदाज्ञापयन्तु।	जिस-जिस पदार्थ के भोजन की इच्छा हो उस-उसकी आज्ञा कीजिये।
125. भवान् देशकालज्ञ: कथनेन किं यथायोग्यमेव पकत्व्यम्।	आप देशकाल को जानते हैं कहने से क्या यथायोग्य ही पकाना चाहिये।
126. सत्यमेवमेव करिष्यामि।	ठीक है, ऐसा ही करूंगा।
127. उत्तिष्ठत भोजनसमय आगत: पाक: सिद्धो वर्त्तते।	उठिये, भोजन समय आया, पाक तैयार है।
128. भो भृत्य! पाद्यमर्ध्यमाचमनीयं जलं देहि।	हे नौकर! इनको पग हाथ मुख धोने के लिये जल दें।
129. इदमानीतं गृह्यताम्।	यह लाया, लीजिये।
130. भो पाचका:! सर्वान् पदार्थान् क्रमेण परिवेविष्ट।	हे पाचक लोगों! सब पदार्थों को क्रम से परोसो।
131. भुञ्जीध्वम्।	भोजन कीजिये।
132. भोजनस्य सर्वे पदार्था: श्रेष्ठा जाता न वा ?	भोजन के सब पदार्थ अच्छे हुए हैं वा नहीं ?
133. अत्युत्तमा: सम्पन्ना: किं कथनीयम्।	क्या कहना है, बड़े उत्तम हुए हैं।
भवता किञ्चित् पायसं ग्राह्यं यस्येच्छाऽस्ति वा।	आप थोड़ी सी खीर लीजिये वा जिसकी इच्छा हो।
134. प्रभूतं भुक्तं तृप्ता: स्म:।	बहुत रुचि से भोजन किया, तृप्त हो गये हैं।
135. तर्ह्युत्तिष्ठत।	तो उठिये।
136. जलं देहि। - गृह्यताम्।	जल दे - लीजिये।
137. ताम्बूलादीन्यानीयन्ताम्।	पान बीड़े इलायची आदि लाओ।
138. इमानि सन्ति गृह्णन्तु।	ये हैं, लीजिये।

क्रमश: - साभार :- संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित-दिल्ली संस्कृत अकादमी)

प्रथम पृष्ठ का शेष

बढ़ाने की चिंता है, दिल्ली सरकार की नई शराब पीने की नीति से दो हजार करोड़ से ज्यादा अतिरिक्त आय होगी। इसके लिए दिल्ली सरकार के उपमुख्यमंत्री ने यह भी कहा है कि अब सरकारी दुकानें बंद होंगी और सारा कार्य प्राइवेट तरीके से किया जाएगा, शराब को टेस्ट करने के लिए लैब भी बनाए जाएंगे ,जो शराब माफिया हैं उनके ऊपर भी निगरानी की जाएगी। दिल्ली सरकार की ये सारी बातें अपनी असामाजिक अवधारणा को छिपाने की नाकाम कोशिश है।

सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने कहा कि 22 मार्च 2021 को दिल्ली सरकार ने इस विनाशकारी नीति की घोषणा की है और अगले दिन 23 मार्च को शहीदी दिवस था, पूरा देश अपने महान वीर बलिदानियों को याद कर रहा है, राजगुरु, सुखदेव, भगत सिंह जिन्होंने अपने देश की आन, बान और शान के लिए हँसते-हँसते अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया, देश की आजादी के लिए बलिदान के वेदी पर आहूत हो गए, इस महान दिवस से ठीक एक दिन पहले ऐसी मानसिकता, ऐसा अनैतिक कानून लागू करके दिल्ली सरकार ने अपने अमर शहीदों का भी अपमान किया है, आर्य समाज पूछता है दिल्ली सरकार से की एक तरफ तो आप बिजली, पानी ओर बस यात्रा नि:शुल्क करके वोत बटोरने के लिए लालायित रहते हैं, देश की युवापीढ़ी को अकर्मण्य बनाने की कोशिश कर रहे हैं और दूसरी तरफ युवा शक्ति को नशे में धकेल कर समाज को बरबाद करने पर तुले हैं। यह दोहरी नीति हम सहन नहीं करेंगें, दिल्ली वाले इसे नहीं सहेंगे और सहन करना भी नहीं चाहिए, इसके लिए आर्य समाज दिल्ली वासियों से भी अनुरोध करता है कि नई शराब नीति के विरोध के लिए आगे आएं, शराब की खरीदारी और प्रयोग को बंद करें, अपना और अपने परिवार के उत्तम स्वास्थ्य, सुख शान्ति और कल्याण के लिए शराब को न पियें और न पिलायें। अगर दिल्ली की जनता यह संकल्प कर लें और 3 महीने ही शराब न पिए तो सरकार की अक्ल ठिकाने आ जाये।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्रीसुरेशचन्द्र आर्य जी ने कहा कि दिल्ली सरकार को युवा शक्ति के भविष्य के विषय में विचार कर अपना फैसला बदलना चाहिए, किसी माँ का बेटा, किसी बहन का भाई, किसी के घर का चिराग और देश का सिपाही 21 वर्ष की छोटी उम्र में शराबी बन जाएगा, इधर-उधर गिरता-पड़ता फिरेगा, पढ़ने-लिखने की उम्र में शराब की बुरी आदत का शिकार होकर उसकी पूर्ति के लिए अपराधी बनेगा, अपने घर परिवार में झगड़ा फसाद करेगा तो क्या दिल्ली में खुशहाली बढ़ेगी, क्या सुख शान्ति बढ़ेगी ?

आर्य समाज का सरकार से अनुरोध है कि समय रहते अपने इस विनाशकारी कानून को लागू होने से पहले ही वापिस ले, अपने राजनीतिक फायदे की भूख को त्याग कर परोपकार करने पर विचार करे,21 वर्ष की छोटी उम्र के बच्चों को नशे की भट्टी में झोंकने से बाज आए, झूठ मुठ के दिखावे से दिल्ली के लोगों को भृमित करना बन्द करे, सीधे तरीके से मानव सेवा और राष्ट्र सेवा का संकल्प करे, व्यक्ति,परिवार, समाज और पूरी दिल्ली की जनता की भावनाओं से न खेले, अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए किसी के घर परिवारों को तबाह मत करे, वरना देखते-देखते ही सरकार स्वयं तबाह हो जाएगी, आर्य समाज सरकार को सद्बुद्धि मिले ऐसी ईश्वर से प्रार्थना करते हुए यह स्पष्ट घोषणा करता है कि अगर सरकार समाज के लिए अपने इस अभिशाप वाले फैसले को नहीं बदलेगी तो हम समाज में जागृति अभियान के साथ साथ सरकार के खिलाफ भी आंदोलन करने से पीछे नहीं हटेंगे।

पृष्ठ 5 का शेष

सूफी भी वहाबी भी इसी से सीखते है और शिया भी।

शायद यही कारण है कि पिछले दिनों चाइना ने अपने देश के मुसलमानों को अपनी नमाज की चटाई और कुरान की प्रतियां सौंपने का आदेश दिया था। डेली मेल के मुताबिक, चेतावनी दी गई थी कि अगर बाद में चटाई और कुरान पाई गई तो गंभीर सजा दी जाएगी। इससे पहले शिनजियांग के अधिकारियों ने पांच साल पहले प्रकाशित हुई सभी कुरानों को हटाना शुरू कर दिया था, जिनमें इन 26 आयतों को उग्रवादी सामग्री बताया था।

यही नहीं साल 2012 में तालिबान लड़ाकों द्वारा अफगानिस्तान में हर रोज मासूम लोगों की हत्या से दुखी होकर अफगानिस्तान और विदेशी सैन्य बलों की ओर से कथित तौर पर कुरान की प्रतियां जलाई गयी थी, उनका दावा था कि यही वो आयतें है जो लोगों को हिंसा करने के लिए उकसा रही हैं। हालाँकि इसके बाद वहां बड़े तौर पर विरोध प्रदर्शन का दौर चला था। हालाँकि कुछ समय पहले अखिल भारत हिन्दू महासभा के तत्कालीन उपप्रधान इन्द्रसेन शर्मा जी ने कुरान की इन आयतों के पम्पलेट बंटवाए थे, तब एक मुस्लिम बंधु ने उनके खिलाफ कोर्ट में याचिका डाल दी, तब उनका जवाब था कि जैसे आयत है कि फिर, जब हराम के महीने बीत जाएं तो मुशरिकों यानि मूर्ति की पूजा करने वालों को जहाँ कहीं पाओ कत्ल करो, और पकड़ो निस्संदेह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।

मसलन जो हिंसक नहीं है, हमलावर नहीं है उसको उकसाना, उसके बाद लिख दिया निस्संदेह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है, तो क्या पहले अल्लाह कत्ल करवाता है फिर दयावान और क्षमाशील भी बन जाता है? अब जो दयावान है वह हिंसक नहीं हो सकता और जो हिंसा के लिए उकसाता है वह कैसे दयावान हो सकता है? ये सवाल भी आधुनिक समाज में खड़ा होता है।

दरअसल अगर देखा जाये तो छठी सातवीं सदी में अरब में कबीलाई समाज था, जिसमें रहने वाले लोगों के अपने रीति रिवाज थे। पढ़े लिखे लोग नहीं थे कबीलों में रहते थे अधिकांश लूटपाट का कार्य था। अचानक वहां इस्लाम के राजनीतिक विचारों को धार्मिकता का जामा पहनाकर कुरान के नियम इन कबिलाई समाज को संचालित करने लगे। यह रहस्य भी किसी से छिपा नहीं है कि इन तरीकों को थोपने या अपनाने के लिए हिंसा का भी इस्तेमाल किया, जैसे कि वर्तमान में तालिबान, अल-शबाब, बोको हरम, इस्लामिक स्टेट समेत अन्य कट्टर आतंकी इस्लामिक संगठन इसी सातवीं शताब्दी के इस्लाम को आधुनिक दुनिया के ऊपर थोपने में हिंसा का रास्ता अपनाने से नहीं चूक रहे है। - ***राजीव चौधरी***

पृष्ठ 3 का शेष

'वासन्ती नवसस्येष्टि (होली) ....

बना दिया गया है। शालीनता और मर्यादा में यदि कोई काम किया जाये तो वह बुरा नहीं होता। हम जहां रहते हैं वहां लोग होली मनाते हैं। आर्यसमाजी अल्प एवं हिन्दू बन्धु अधिक संख्या में हैं। वह होली को परम्परानुसार एक दूसरे के चेहरों पर रंगों को लगाकर मनाते हैं। हमने परिवारों व गली मुहल्लों में लोगों को इस पर्व को बहुत पवित्रता से मनाते हुए भी देखा है। अत: यदि मर्यादा में रहकर आमोद प्रमोद किया जाये तो वर्तमान आधुनिक काल में इसे किया व जारी रखा जा सकता है। हम अनुमान करते हैं आर्यसमाज में संन्यासी व वृद्ध विद्वानों की संख्या तो कुछ हजार ही हो सकती है अत: शेष बन्धुओं को अपने सहकर्मियों व पड़ोसियों के साथ इस पर्व को पूरी भावना व प्रेम से मनाना चाहिये, जिससे सम्बन्धों की मधुरता बनी रहे और हम समय-समय पर उन्हें अपने सिद्धान्तों, मान्यताओं व विचारधारा का परिचय कराते रहें।

होली का पर्व समस्त मानव समाज मुख्य सनातन वैदिक धर्म को मानने वाले बन्धु व परिवार मिलकर मनाते हैं। इससे सामाजिक एकता व सामाजिक सम्बन्धों को बल मिलता है और अपने मित्रों तथा पड़ोसियो आदि से सम्बन्ध मधुर व सुदृढ़ होते हैं। होली के अवसर सब को अपने मित्रों व पड़ोसियों से मिलकर उन्हें शुभकामनायें देनी चाहियें, सामूहिक प्रीतिभोज वा मिष्ठान्न आदि के सेवन का आयोजन करना चाहिये और इस दिवस पर भजन व सत्संग आदि आयोजित कर इस पर्व को पूरे उत्साह से मनाना चाहिये। इससे हमारा समाज मजबूत होगा। हम इस अवसर पर सामूहिक आयोजन सभा आदि करके अपने धर्म व संस्कृति की स्थिति व इसकी रक्षा पर भी विचार कर सकते हैं। अन्धविश्वासों व पाखण्डों को छोड़ने व दूर करने तथा सत्य परम्पराओं को अपनाने पर भी विचार व निर्णय ले सकते हैं। अत: देश, काल व परिस्थितियों के अनुसार इस पर्व को मनाना उचित है जिससे हमारा देश व समाज सुदृढ़ बने, धर्म व संस्कृति सुरक्षित रहे। आगामी 28 व 29 मार्च, 2021 को होली के अवसर पर सभी बन्धुओं को हार्दिक शुभकामनायें।

- 196, चुक्खूवाला-2,
देहरादून (उत्तराखण्ड) - 248001
मो. 09412985121

शोक समाचार

श्रीमती स्नेह लता गुप्ता जी का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर के पूर्व मन्त्री श्री रविकान्त जी की भाभी एवं डॉ. सुभाष चन्द्र गुप्ता जी की धर्मपत्नी श्रीमती स्नेह लता जी का 21 मार्च को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार जोगी गेट जम्मू में 22 मार्च को पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 24 मार्च को आर्यसमाज बख्शी नगर जम्मू में सम्पन्न हुई।

श्री वीर सिंह जी का निधन

आर्य केंद्रीय सभा गाजियाबाद के महामन्त्री व आर्य समाज सिहानी के पूर्व मन्त्री श्री वीर सिंह जी का दिनांक 22 मार्च, 2021 को 57 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया।

श्री देवी दयाल महाजन जी का निधन

आर्य समाज रोहतास नगर के विशिष्ट सदस्य श्री देवी दयाल महाजन जी का दिनांक 18 मार्च, 2021 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 20 मार्च को दुर्गा मंदिर नवीन शाहदरा में सम्पन्न हुई।

आचार्य नरेन्द्र मैत्रेय को पुत्री शोक

आर्यसमाज के वैदिक विद्वान आचार्य नरेन्द्र मैत्रेय जी की सुपुत्री कु. अर्चिका का मात्र 23 वर्ष की अल्पायु में 19 मार्च को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 20 मार्च को नाहरपुर शमशान घाट रोहिणी सैक्टर-3 में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

आचार्य पं. ब्रह्मदेव शर्मा जी को भ्रातृशोक

आर्यसमाज के वैदिक विद्वान आचार्य ब्रह्मदेव जी के छोटे भाई एवं आर्यसमाज लक्ष्मी नगर के पूर्व पुरोहित श्री प्रेम नारायण शर्मा जी का 11 मार्च को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति 12 मार्च को हिण्डन घाट गाजियाबाद में हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 17 मार्च को लॉयन्स क्लब विवेक विहार में सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माों को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 22 मार्च, 2021 से रविवार 28 मार्च, 2021

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 25-26/03/2021 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 24 मार्च, 2021

आर्य सन्देश टीवी पर आयोजित कार्यक्रम सुर स्पर्धा

पीयूष बिष्ट बने सीजन-1 के विजेता

प्रतिष्ठा में,

महाशय धर्मपाल आर्य मीडिया सेंटर द्वारा आर्य संदेश टीवी पर आर्य समाज से संबंधित भजनों की ऑनलाइन प्रतियोगिता "सुर स्पर्धा" का आयोजन किया गया। 1 मार्च से 11 मार्च तक चली इस ऑनलाइन प्रतियोगिया में पूरे देश से सभी वर्गों के लोगों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। सुरों के संगम में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए सुरों के महारथी फरीदाबाद के पीयूष बिष्ट ने विजेता का खिताब जीता तो फरीदाबाद की ही स्नेहलता और चंडीगढ़ की सुवर्चा उपविजेता रही। विजेता-उपविजेता के साथ ही प्रतियोगिता में दर्शकों द्वारा एसएमएस वोटिंग से सुर सपर्धा पॉपुलर वॉइस का चयन किया गया। जिसमे दरभंगा, बिहार की आस्था झा को पॉपुलर वॉइस चुना गया। कार्यक्रम में निर्णायक गण श्री अंकित आर्य, श्रीमती सुदेश आर्या एवं श्री संदीप आर्य ने सभी प्रतिभागियों की प्रस्तुतियों को गहनता के जांचा और निर्णय दिया। श्रीमती अनु वासुदेवा ने कार्यक्रम का संचालन किया।

इस मौके पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, धर्मपाल आर्य और महामंत्री विनय आर्य में सभी प्रतिभागियों के हौसले की सराहना करते हुए विजेताओं को बधाई दी। कार्यक्रम को 20 से अधिक ओ.टी.टी. प्लेटफार्म पर हजारों दर्शकों ने देखा और सराहा गया।

पृष्ठ 4 का शेष

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव

आयोजन करा रहें हैं।

इस कार्यक्रम में श्रीमती उषा किरण जी उपप्रधाना, श्री योगेश आर्य जी, श्री एस पी सिंह जी एवं श्री हरिओम बंसल जी, मंत्री, श्री सुरिन्द्र चौधरी जी, व्यवस्था सचिव, श्री सुखबीर आर्य जी, मंत्री, दि आ प्र सभा, डॉ. मुकेश आर्य जी, कोषाध्यक्ष, वे.प्र.मं पश्चिमी दिल्ली, श्रीमती रचना आहूजा जी, आर्य प्रान्तीय महिला सभा, श्रीमती विभा जी तथा श्री हर्ष आर्य जी, गुरुग्राम और श्री विनीत बहल जी, कीर्ति नगर ने इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। त्पश्चात श्री सुरेंद्र रैली जी वरिष्ठ उपप्रधान ने अध्यक्षीय उद्बोधन में सभी को संकल्प लेने के लिए प्रेरित किया कि हम सब महर्षि देव दयानन्द जी के दिखाए मार्ग को और अच्छे तरीके से उज्जवल करेंगे और सब आए हुए सदस्यों का धन्यवाद किया।

आदरणीय आचार्य सूर्य देव जी ने अपने विचार रखते हुए ऋषि को श्रद्धा सुमन देते हुए शांति पाठ कराया।

इस कार्यक्रम का जीवंत प्रसारण आर्य संदेश टीवी पर प्रसारित किया गया, महाशय धर्मपाल आर्य मीडिया केन्द्र की सम्पूर्ण टीम का धन्यवाद। 6:30 बजे से कुछ क्षण कम ही समाप्त हो गया। श्री कीर्ति शर्मा जी ने लड्डू का प्रसाद तथा श्री जितेंद्र खट्टर जी ने स्वादिष्ट पुलाव की व्यवस्था की।

- सतीश आर्य, महामन्त्री
आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह